फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव

डॉ. संतोष कुलकर्णी

डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. हणमंत पवार

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य
संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव

डॉ. संतोष कुलकर्णी

डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. हणमंत पवार

यश पब्लिकेशंस

नई दिल्ली, भारत

ISBN : 978-93-85647-03-1

प्रथम संस्करण : 2022

© लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद्, लातूर

मूल्य : ₹ 1495/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्लिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032 (भारत)

विक्रय कार्यालय
2/9, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

संपर्क : 9599483887
ई-मेल : info@yashpublications.co.in
वेबसाइट : www.yashpublications.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at : amazon.in, flipkart.com

लेज़र टाइपसेटिंग : जी.आर.एस. ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

10. फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल उपन्यास में जनवादी चेतना
प्रो. डॉ. रामकृष्ण बदने

11. मैला आँचल उपन्यास : एक अध्ययन
डॉ. रत्नमाला धारबा धुळे 60

12. 'मैला आँचल': एक समस्या प्रधान उपन्यास
डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख 63

13. 'मैला आँचल' उपन्यास का यथार्थवादी स्वरूप
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद 70

14. फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' उपन्यास में व्यक्त राजनीतिक स्वर
डॉ. शिंदे अनिता मधुकरराव 76

15. 'मैला आँचल' की प्रासंगिकता
आरती कुमारी 81

16. 'मैला आँचल' में व्यक्त पुरूष चरित्र
डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटिल 87

17. 'मैंला आँचल' उपन्यास के डॉ प्रशांत की प्रासंगिकता
डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील 92

18. मानवीय संवेदना के कुशल चितेरे कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु
डॉ. सूर्यकांत शिंदे 97

19. 'मैला आँचल' में व्यक्त ग्रामजीवन
डॉ. श्रीरंग वट्टमवार 101

20. 'मैला आँचल' में व्यक्त राजनीतिक स्वर
डॉ. राम दगडू खलंग्रे 108

21. मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु
मंगल संभाजीराव खुपसे 116

22. 'मैला आँचल' उपन्यास में अभिव्यक्त पुरूष पात्र
इम्रान शेख 122

'मैला आँचल' उपन्यास का यथार्थवादी स्वरूप

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

आँचलिक उपन्यासों की स्वरूप मीमाँसा करने की चेष्टा कई विद्वानों ने की है। यहाँ पर कुछ प्रमुख परिभाषाओं का उल्लेख कर देना अनुपयुक्त न होगा। सारिका के अक्तूबर 61 के अंक में राजेंद्र अवस्थी ने आँचलिक उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "कुछ उपन्यासों में किसी प्रदेश विशेष का यथातथ्य और बिम्बात्मक चित्रण प्रधानता प्राप्त कर लेता है, उन्हें प्रादेशिक या आँचलिक उपन्यास कहा जाता है।"[1]

आँचलिक उपन्यास उन उपन्यासों को कहते है जिनमें क्षेत्र विशेष के जन-जीवन का सर्वांग और समूचा चित्र प्रस्तुत किया जाता है। उसमें उस क्षेत्र विशेष के मानवों की संपूर्ण विशेषताएँ, सांस्कृतिक दशा को उभारना ही इस कोटि के उपन्यासकार का लक्ष्य होता है। नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार, "अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के जीवन का वैशिष्ट्यपूर्ण चित्रण जिन कथा-कृतियों में हो हो उन्हें ही आँचलिक कहा जाना चाहिए।"[2]

हिंदी का सबसे पहला शुद्ध आँचलिक उपन्यास सन 1954 में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास के लेखक थे फणीश्वरनाथ रेणु। इस उपन्यास का नाम था 'मैला आँचल'। इस उपन्यास की भूमिका में उन्होंने प्रथम बार आँचलिक उपन्यास की चर्चा की है। उन्होंने लिखा है कि, "यह 'मैला आँचल' एक आँचलिक उपन्यास है। कथानक है पूर्णिया का। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव को प्रतीक मानकर उपन्यास का कथा-क्षेत्र बनाया है।"[3] भूमिका के इन शब्दों को पकड़कर हिंदी में आँचलिक उपन्यासों कीचर्चा इतनी अधिक चलाई गई कि अनेक आँचलिक उपन्यास लिखने की प्रेरणा हिंदी के उपन्यासकारों को मिली।

आँचलिक उपन्यास का सारा सौंदर्य उसकी संपूर्ण चेतना के यथार्थवाद पर आधारित रहता है। साहित्य क्षेत्र में यथार्थ को सर्वप्रथम प्रवर्तित करने का श्रेय फ्रांस को ही है। 18 वीं शताब्दी के अंतिम और 19 शताब्दी के प्रथम चरण में वहाँ इस वाद का उदय एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में हुआ था।

साहित्यिक यथार्थवाद पर राजनीतिक यथार्थवाद का प्रभाव पड़ा। राजनीति में सबसे महान यथार्थवाद मार्क्सवाद के नाम प्रसिद्ध है। मार्क्सवाद का आधार वैज्ञानिक चिंतन रहा है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जे. डी. बरनेल ने माडर्न क्वार्टरली खंड 2 संख्या तीन में लिखा था, "सावधानी से विश्लेषण विभिन्न तथ्यों का विलगाव, कारणों का अनुसरण करते हुए परिणाम पर पहुँचना, प्रयोग पर निर्भर रहना इन सब बातों को मार्क्सवादियों ने अपना लिया है और इनसे उन्हें पुष्ट वैज्ञानिक आधार मिला है।"[4] उपन्यासकारों ने राजनीति के इन आधुनिक यथार्थवाद की अवतारणा अपने उपन्यासों में जी खोलकर की है। पाश्चात्य उपन्यासों में हमें उनका भव्य रूप अधिक मिलता है। किंतु हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में मार्क्सवाद के विकृत अंगों की ही अवतारणा अधिक की गई है, जिससे आँचलिक यथार्थवाद कलुषित हो गया।

आँचलिक उपन्यासों का प्राण परिवेश चित्रण है। परिवेश के चित्रण में भी आँचलिक उपन्यासकारों की दृष्टि सौंदर्य पर कम कुरूपता पर अधिक गई है। आँचलिक उपन्यासकारों ने अधिकतर अपने उपन्यासों के वर्णन के रूप में मैले आँचलों को ही चुना है, स्वच्छ आँचलों को नहीं। उनकी इस प्रवृत्ति पर पाश्चात्य देशों के सभी विकृत यथार्थवादों का प्रभाव पड़ा है। फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल शीर्षक उपन्यास में भी यथार्थवाद का बहुत स्वस्थ रूप नहीं दिखाई देता। मेरीगंज के जन-जीवन के चित्रण में उपन्यासकार ने लोक-संस्कृति का नग्न और यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है जो उस अंचल विशेष की विभूति है। किंतु उसको पढ़ने के बाद मन में ऐसी प्रतिक्रिया होती है कि उपन्यासकार ने उनमें जो कुछ भी उदात्त है, उसको खोजने की चेष्टा न करके केवल उन तत्वों की ही झाँकी संजोई है, जिनमें सामान्य जन रुचि रमती है। सामान्य जन-रुचि अधिक कुप्रथाओं अंधविश्वासों, कुत्सित परम्पराओं और नग्न सेक्स के नग्न चित्रों में ही रमती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि उपन्यासकार ने इतने चित्रों को अति यथार्थ रूप में अवतरित करके जन रुचि को मुग्ध किया है। किंतु वह एक साहित्यकार का दायित्व नहीं निभा सका। साहित्यकार का दायित्व है, "कुरूपता में भी सौंदर्य की सृष्टि करना, शिवेतर में भी कल्याण का विधान करना और अनुदारता में भी

उदात्त खोज निकालना है।"[5]

उपन्यासकार ने जिस अंचल को चुना है उस अंचल की रूपरेखा अति यथार्थ रूप में बड़े संश्लिष्ट ढंग से प्रस्तुत की है। विवरण की विविधता, जीवन की व्यापकता, सामाजिक तथ्यों की सजीवता, भौगोलिक वर्णनों की वास्तविकता वहाँ के विश्वासों और रीति-रिवाजों की सहजता तथा उसके अंचल के जीवन की सरलता ने उपन्यासों को बहुत रोचक व लोकप्रिय बनाया है। आँचलिक उपन्यासों में यथार्थवाद की एक और विशेषता है। आँचलिक उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रणों में आस्था नहीं रखता। वह अंचल-विशेष के पात्रों के सहज चरित्र को जिसका विकास मनोवैज्ञानिक की पृष्ठभूमि पर न होकर उस अंचल विशेष की पृष्ठभूमि पर होता है, उसी का वह उद्घाटन करता है। इसमें एक नई प्रगति का उन्मेष हुआ है, जिसने आँचलिक उपन्यासों को नया सौंदर्य प्रदान किया है।

'मैला आँचल' उपन्यास का कथानक पूर्णिया जिले के मेरीगंज अंचल का है। मेरीगंज मिथिला अंचल में नेपाल और पाकिस्तान की सीमा में यहाँ की सारी धरती गीली रहती है और यह अंचल मलेरिया और हैजे के प्रकोप से ग्रस्त रहता। इस गाँव में मलेरिया सेंटर और चर्खा सेंटर की स्थापना होती है। सारा घटनाक्रम इन दोनों संस्थाओं तथा गाँव के मठ की हलचल को लेकर गठित होता है। अंचल की भाषा ही मेरीगंज की समस्त सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक हलचल और परस्पर के लड़ाई झगड़ों का यथार्थ चित्र सामने आ जाता है। मेरीगंज अंचल का यथातथ्य और बिंबात्मक चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है।

"ऐसा है एक गाँव मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब बूढ़ी कोशी को पार करके जाना पड़ता है। बूढ़ी कोशी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है। इस अंचल के लोग इसे 'नबाबी तड़बन्ना' कहते है।"[6] राजपूतों और कायस्थों में पुश्तैनी मन-मुटाव और झगडे होते आये है। ब्राह्मणों की संख्या कम है। इसलिए वे हमेशा तीसरी शक्ति का कर्तव्य पूरा करते है। यादवों का उदय नया है, परंतु उसने अपनी शक्ति बढ़ा ली है। सारा क्षेत्र मलेरिया से बुरी तरह ग्रस्त है। संथाल लोग बाहर से आये है वे गाँव के बाहर बसे हुए हैं।

गाँव का मठ जहाँ का महंत सेवाराम है और बाद में रामदास बनता है, गाँव की सारी हलचल का केंद्र है। मठ के भंडारे में जात-पात का घृणित यथार्थ रूप उभरकर सामने आ जाता है। मठ व्यभिचार का केंद्र बना हुआ है। यहाँ

सुबह-शाम कीर्तन और उपदेश अवश्य होते है, परंतु यहाँ के महंत तथा कोठारिन आदि सभी कामलोलुप है। महंत सेवादास से लक्ष्मी का यौन-संबंध चलता है। उसके बाद रामदास महंत होता है, उससे भी उसका यौन संबंध चलता है। तत्पश्चात लक्ष्मी बालदेव को लेकर दूसरा मठ बनाती है। इस प्रकार का यथार्थ चित्र आज भी दिखाई देता है। जलालगढ़ के पास 'मैला आँचल' के मठ का वर्तमान संस्करण दिखा, जिसके नाम आज भी सैकड़ों एकड़ जमीन है, वही बालदेव के वर्तमान भी उपस्थित थे, जाति से भी यादव, नाथो यादव, जिसने जिद्दी अभियान से बिहार सरकार जलालगढ़ के किले का जीर्णोद्धार करने जा रही है।

गाँव में औरतों की लड़ाई का दृश्य अनोखा ही होता है। इस लड़ाई में काम काज तनिक भी नहीं रूकता। औरतें हाल रांड-निपूती की गालियों से लेकर अंदरूनी-अंदरूनी खाते को खोल-खोल कर रखती है और हाल ही एक-दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर गुड़गुड़ाने लगती है। मेरीगंज की तंत्रिमा-टोली में मंहगूदास के घर के पास एक ओर सारंगा सदाब्रिज का स्वांग चल रहा है, दूसरी सारी औरतें झगड़ रही है।

मेरीगंज गाँव के पंचायत का यथार्थ चित्र रेणु ने इस प्रकार चित्रित किया है, "तहसीलदार की बेटी शाम से ही आधे पहर रात तक, डागडरबाबू के घर में बैठी रहती है, चांदनी रात में कोठी के बगीचे में डागडर के हाथ में हाथ डालकर घूमती है। तहसीलदार साहब की कोई कहने की हिम्मत कर सकता है कि उनकी बेटी का चाल-चलन बिगड़ गया है? तहसीलदार हरगौरीसिंह अपनी खास मौसेरी बहन से फँसा हुआ है। बालदेव कोठारिन से लटपटा गए है। कालीचरण ने चरखा स्कूल की मास्टरनीजी को अपने घर में रखा लिख है। उन लोगों को कोई कुछ कहे तो? ...जितना कानून और पंचायत है सब गरिबों के लिए है? हूँ।"[7]

यह सच है कि कानून सिर्फ गरीब लोगों के लिए ही है। बड़े चाहे जो करें उनको कोई कानून लागू नहीं होता, यह आज का तंत्र है। आज भी इस तरह का व्यभिचार हमें गाँवों में दिखाई देता है। रेणु ने अपनी दूरदृष्टि से आज के यथार्थ की बात की है। आज भी गाँव में जमीदार, मठाधीश, पंचायत का दृश्य वहीं है।

उपन्यास में गाँव के कुछ आंचलिक, सांस्कृतिक यथार्थ रूप के दृश्य भी प्रस्तुत होते हैं। मेरीगंज अंचल में होनेवाले सांस्कृतिक समारोहों, लोकनृत्य, गायन आदि का आंचलिक भाषा में ही यथार्थ वर्णन हुआ है। मेरीगंज के मठ पर भंडारा और प्रतिदिन कीर्तन का जो आयोजन होता है, उसमें जातिभेद का दृश्य दिखाई

देता है। समारोह में जो स्वांग रचा गया है उसमें आंचलिक शोषण, जमींदारों तथा सरकार की मिली भगत का दृश्य यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

उपन्यास में रेणु ने संथाल और किसानों के साथ होनेवाले अन्याय का यथार्थ चित्र रेखांकित किया है। संथाल और किसान तथा अन्य जो जमन को जोतते है, तैयार करते है, उनको उसका समुचित भाग नही मिलता। जमींदार विश्वनाथप्रसाद संथालों और किसानों की भूमि पर कब्जा कर लेते है। वे खेलावन यादव और ठाकुर रामकृपाल सिंह की भूमि हड़प लेते है। यथार्थ रूप में आज भी मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान में किसान और संथालों की भूमि हड़पी जा रही है। ग्लोबेलायजेशन के नाम पर किसान, संथाल तथा आदिवासियों को खदेड़ा जा रहा है।

रेणु ने भ्रष्टाचार का भी यथार्थ चित्र यहाँ उपस्थित किया है। हमारे देश में स्वतंत्रता के पश्चात भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुँच गया। जो लोग अनैतिक थे, जुआ का अड्डा चलाते थे, देशद्रोह करते थे उनको ही कॉंग्रेस में बड़े-बड़े पद मिल जाते हैं। वे सरकारी अफसरों से मिलकर खूब भ्रष्टाचार करते है और अपनी जेबे भरते है। वे चोरी-छिपे भारत का माल पाकिस्तान भेजने में भी नहीं हिचकते। भ्रष्टाचार का यह राजनैतिक रूप बावनदास के प्रसंग में सामने आता है। कलीमुद्दीन घाट से माल से भरी हुई गाडियाँ जो पाकिस्तान जा रही थी, रोकता है। परंतु गाडी से कुचलकर उसका अंत कर दिया जाता है और उसकी लाश को नदी में फेंक दिया जाता है।

मैला आँचल में फणीश्वरनाथ रेणु 'जाति समाज' और 'वर्ग चेतना' के बीच विरोधाभास को क्या कहते है। आज इस इलाके को मैला आँचल की दृष्टि से देखने पर जाति समीकरण और संसाधनों पर वर्चस्व की जातीय व्यवस्था उपन्यास के कथा के लगभग अनुरूप ही दिखता है। आधुनिक बालदेव यानि यादवों ने किले की जमीन को कब्जा मुक्त किया, वह भी अपनी ही जाति के किसी दबंग परिवार के कब्जे से। जलालगढ़ में ही साहित्यकार पूनम सिंह के भूमिहार परिवार के पास भी काफी जमीनी मालिकाना है। जातियाँ उपन्यास के कथा काल की हकीकत थी और आज की भी।

मैला आँचल में एक दोष यह भी है कि आंचलिकता में बहुत गहरे रंग भर दिए है। इसी औचित्य की तो उत्पत्ति हुई है, परंतु मानव संवेदना का गला घोंट दिया गया है। अति यथार्थवाद इस उपन्यास का प्रमुख दोष बन गया है। सेक्स जीवन के नग्न चित्र पाठकों में अरुचि उत्पन्न करने लगते है। मेरीगंज के महंत

का व्यभिचार चरित्र कुछ साधुओं पर लागू हो सकता है, सभी पर नहीं। परंतु इस उपन्यास को पढ़कर ऐसा लगता है कि गाँव के मठों के सभी महंत कामुक, पतित और दुराचारी होते है।

आंचलिक भाषा का अधिक प्रयोग भी इस उपन्यास का दोष बन गया है। मेरीगंज अंचल का चित्र खिंचते समय उपन्यासकार ने उस अंचल की बोलियों, गाये जानेवाले लोक-गीतों की इतनी अधिक भरमार कर दी है कि उपन्यास का आनंद और गरीब गौण पड़ जाता है और उस अंचल की बोली में लिखे गीतों का रस प्रधान हो जाता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, मैला आँचल उपन्यास में देश की स्वतंत्रता के पश्चात पनपे हुए भ्रष्टाचार का व्यापक रूप सामने आ गया है। स्वतंत्रता प्राप्त होते ही चोर बाजारी तथा स्वार्थ-लिप्त लोग सत्ता-पार्टी कॉंग्रेस में घुस गये। सोशलिस्ट तथा अन्य विपक्षी पार्टियों का कोई अस्तित्व नहीं रहा। कॉंग्रेस के स्वार्थी लोग नीचे से लेकर उपर तक फैल गये। अपने स्वार्थ के लिए इन्होंने सरकारी कर्मचारियों को भी भ्रष्ट कर दिया। सरकारी कर्मचारियों से मिली भगत कर ये चोरबाजारी में लग गये। उपन्यास में जो यथार्थ चित्रित हुआ है वहीं आज का यथार्थ है।

संदर्भ

1. डॉ. राजेंद्र अवस्थी, सारिका (1961)
2. डॉ. नंददुलारे वाजपेयी, सारिका (1961)
3. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल की भूमिका से
4. जे. डी. वरनोल, मार्डन क्वालिटी, खंड 2 संख्या-3
5. ग्रामांचल के उपन्यास, अभिगमन, तिथि, 21 मार्च 2013
6. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृ. 9
7. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल
8. रेणु के गाँव में आज भी जिंदा है 'मैला आँचल के पात्र', 21 मार्च 2013
9. हिंदी उपन्यास और राजनीति, अभिगमन, तिथि, 21 मार्च 2013
10. हिंदी साहित्य का इतिहास, श्यामचंद्र कपूर